

ॐ नमोऽष्टावक्रसूत्राय। यथा चित्तं। पूर्वीकं विधिः॥ नवकर्म। बुधः
मीनः। देवः। वि। कयस्य वृत्ता। याय। एता वि। (थं) धूनकात। समस्त
देव वृत्ता। याय। जल याय। विधि। (थं) समस्त। कि। याय। याय। पृथक्
वसुधन याय। मध्यम। (म) सति। पूर्वस। सायाद्युत। दक्षिणस। (म)
मय। पश्चिमस। साधयि। उत यस। साइइ। जय यादाव। स धनया

याधनातिथवदात्र सावायाग्भयखायलिप्रसिवायावमा
नद्रुयावबाहावयाकुंशविवात्रास्सजाखसीदयथायसेत
याधनाधीमदानकत्वधाधीमसेचमद्युपदानकइत्ये
ष्वन्याथीदानकेअत्रमेधुलदानकविहन्ननयादावयः
रुगवावियअत्रयावयाधनायादावकायावदा

नृपावतय। धनागिरुदसनायादने॥ ॥ धना। अत्र न। यक्रम
विविय। नृपाकान्। अत्र उवाच। सर्वपापविनाश। धे। यन्ना धेव
वियय। महाकायू। काना धे। देदिमयेक गता वै। कायवाक
विरु। अत्र धे। इति। धे। धनायच। महाकायू। काना धे। देदिः
मगाययेक वै। अत्र धे। नमो रते। सर्व धातु वि। धे। धे। महा

कात् माका नाथं देहि मंगल वयसक नै दुःखयया सोमा कविः
नायक यक वावता सर्वपाप विनाशार्थं सुसिद्धसमातलि ॥
॥ ॥ श्रुति धनदा वयं कृणुत ॥ श्रुति धनया दातुं विना याता वि २
या ॥ श्रुति धन तु कर्तुं वयं कृणुत ॥ विना यावत् सत्तावत् कृणुत
॥ ॥ धना गुप्तं धनदानं विधिः ॥ वृद्धः धर्मः सर्वः सद्यः

वदानं ॥ यागाद्यः पूजाः न्यासः ॥ ईं आ ॥ अर्थः वेदाय नायवत्तयः
वीर्यमिदं सादा ॥ ईं आ ॥ अर्थः अथाहाय वत्तय वीर्यमिदं सादाः
दा ॥ यत्नसंस्तवः ॥ अमिताहाय ॥ अमोघसिद्धिः ॥ यावन्ति ॥ मामकिः
यदनी ॥ ताया ॥ वयं कृणुत ॥ पूजा ॥ मुक्तिः ॥ यावद्दुःखं न संभवादि
मथा निधनं सानं विवृद्धं सरी ॥ वृद्धं वृद्धं ॥ अथ वृद्धं नाथं मृगं

ममदिदं गच्छ वत । सै ह्यनकया धि वज्रव लेय कइ इत्या
क न कश्चि न नाइ गदना पिमुद विम पिण काय । वं नै नमः ॥ ॥
धममै धुन । डें आ ४ आ र्य पु ह्या वा य मिता य वज्र पूर्वी पति युः ३
सादा ॥ डें आ आ र्य ग धु वा दा य वज्र पूर्वी पति यु सादा ॥ डें आ ४
आ र्य द स नु मि ४ वा य वज्र पूर्वी पति यु सादा ॥ डें आ आ र्य स

मा धि वा ज्ञा य वज्र पूर्वी पति यु सादा ॥ डें आ ४ आ र्य ली का वना ४
वा य वज्र पूर्वी पति यु सादा ॥ डें आ ४ आ र्य स धर्म यै धु वा का
य वज्र पूर्वी पति यु सादा ॥ डें आ ४ आ र्य ली लित विरु या य वज्र प
र्वी पति यु सादा ॥ डें आ ४ आ र्य स व र्क य ता सा ता य मा य वज्र
पूर्वी पति यु सादा ॥ डें आ ४ आ र्य त था गत मु च्छ का य वज्र प

वीपतिचुसादा॥ ॥ वैयायवायपूजा॥ भुति॥ यासवस्तुग
यानय॥ ययसमभक्तविम॥ अवका नूयामाग्नस्तुतया
नगधित॥ कृती लोका र्थसम्यादिका सर्वाका नमिदेवदनि
मूनयाति॥ यययसगता॥ तस्मै अवका वाधिसस्तुगधिः
नावधस्तुमागुनम॥ ॥ सैधमैधुन॥ आर्याववाकिग

वैयायवजपूषीपतिचुसादा॥ डै॥ आ॥ अर्यमैतयवजपूः
वीपतिचुसादा॥ डै॥ आ॥ अर्यगतामगतास्तुनयवजपूषीप
तिचुसादा॥ डै॥ आ॥ अर्यसमक्रुदायवजपूषीपतिचुसा
दा॥ डै॥ आ॥ अर्यवजपा नयवजपूषीपतिचुसादा॥ डै॥ आ॥
अर्यमैरुयायवजपूषीपतिचुसादा॥ डै॥ आ॥ अर्यः

सर्व निवचन विरुद्धि (व वरु पूर्वी प्रतिबुद्धादा ॥ ॐ अ ॥ ४५ ॥
र्यात्रिनि बरायसादा ॥ ॐ अ ॥ ४५ ॥ र्यात्रिनि बरायवचन पूर्वी
प्रतिबुद्धादा ॥ वैवायव्यपूजा ॥ तुमि ॥ वृधेनमामि धानती ॥ १
वयपययावि मेया लकमम क्षममनरुदे ॥ नृशायिषी
पयहि गो ॥ धृतीमशुधावी ॥ विरुद्धि नृत्रिनि बरायसादा ॥

नमामि ॥ ॥ धना अचयाचक ॥ ॐ नम ४५ ॥ ३ धर्म धातुवा
लाभयवचन संप्रविबुद्धादा गवने ॥ ममाक्षी वृद्धाया नच
था ॥ वृद्धीयनसूगता लाका प्रवृद्धादा ॥ सायधिदवान
समनूकाना नृ ॥ अक्षीप्रतिबुद्धादा ॥ वैवायव्यपूजा ॥ तुमि
मि ॥ वृद्धि अक्षीमि धीनामा ॥ यावताव ॥ वृद्धस्यनेन कुमि ॥

द्विपदानामैव ॥ ॐ ॥ बुद्धिजन आरा र्यसक्त ॥ ॐ ना पय
य ॥ क्रिथव नामन ॥ तावति वनवद्वयपूनायी ॥ वृद्धसुभा
ययाय ॥ देव ॥ मनूरा ॥ असूच ॥ थनसमस्तुयी ॥ डरुमथः
धिष्ठ ॥ वृद्धसुसपनयाय ॥ ॥ अर्हमिथनामातावतिव ॥ धम
भावनगच्छामि ॥ विनामानामैवयी ॥ ॐ ॥ क्रिथव नामन

वतिव नवद्वयपूनायी ॥ धमभावनयाय ॥ तावति ॥ आनिदव
दकयी ॥ डरुम ॥ थथिष्ठु धर्मसुसपनयाय ॥ ॥ अर्हमिन्कः
नामायावताव ॥ सद्यसपनैगच्छामि ॥ नाना नैमैवयी ॥ ॐ ॥
क्रिनक्रिव नवद्वयपूनायी ॥ सद्यसु भावनयाय ॥ समस्तुस
द्य ॥ गद्य ॥ गद्य ॥ नायायाकायाडरुम ॥ थथिष्ठु ॥ सद्यसुभा

जनयाय । थथ धर्क सिवा न वृत्ता यथाहा ॥ ॥ धृति धूनः
काव । भिषव तिष्ठा याय । मता का । तात्र या । सत्माननताः
य । समान विर । सकाननय । धृति धून काव । विसन्न नयाय
द व प्रता । धृति धून काव । कामा विप्रता । थनानि कश्चाः
रुपिन कश्चा । गन च कश्चाय कश्चा ॥ तादा या स । लीखन ४

[illegible]

कवि लाया च गीता च । न दायात के नाग ने । अथा व सर्व व
साया । कवि काया नु वि (ठा) वत ॥ ॥ (म) मरु क व ल ग्रा च
१ व म व ल (म) म री । क्रा व स क व द या । द धि री क रानि च
॥ अ री से क व ली ग्रा च । वि व री के क (म) री के । (म) म री दः
वि स या दि । क (म) द के न मि थरी ॥ । डि अ मा च व चि थुः

द्व (म) ध री स म लु न धि वि २ थु द स ल म दा व री धं धा व री
पी क र ग व च्छा य (म) ध न मी नु ॥ ॥ (म) म री (म) री ॥
(म) म री । क्रा ला या व च्छि व मा न । सा इ इ । (म) री २० सा ध ४
मि । (म) री २० सा ध व (म) री ४ । क र या ली र व (म) री ४ धि
मि री क र ग व च्छा य री ग री ॥ थु र ॥ ॥ ॥

आर्य समाज

2643

ASHA ARCHIVES